2. दया की जीत

घायल पशु-पक्षियों की देखभाल एवं सेवा करना मानव का सबसे बड़ा धर्म है। जीव-जंतुओं के प्रति संवेदना प्रकट करती हुई महात्मा बुद्ध के बचपन की इस कहानी को पढ़ें।

एक दिन सोते समय राहुल अपनी माँ यशोधरा से बोला, "माँ! तुम मुझे कोई कहानी सुनाओ।" माँ ने कहा, "बेटा! कहानी तो दादी और नानी सुनाती हैं।" बच्चे ने ज़िद करते हुए कहा, "नहीं माँ, तुम ही मुझे कहानी सुनाओ।" "ओ हो! तुम बड़े ज़िद्दी हो। ठीक है, मैं तुम्हें कहानी सुनाती हूँ।" कहते हुए यशोधरा ने कहानी प्रारंभ की।

प्राचीन समय में शुद्धोधन नाम के एक राजा थे तथा उनकी पत्नी का नाम माया था। उनके यहाँ एक पुत्र ने जन्म लिया। दोनों ने उसका नाम सिद्धार्थ रखा।

सभी ने राजा को बधाई दी। राजा ने राज ज्योतिषी को बुलाकर बच्चे का भविष्य जानना चाहा। ज्योतिषी ने कहा, "महाराज! यह बच्चा बड़ा होकर राजा तो बनेगा, पर यह राज-पाट छोड़कर मानव-सेवा और जीव-सेवा करना ही अपना धर्म समझेगा।" यह सुनकर राजा अधिक खुश नहीं हुए। उन्होंने बच्चे को राजसी सुख-सुविधाओं की आदत डालनी शुरू कर दी।

सिद्धार्थ अपने चचेरे भाई के साथ पढ़ता और खेलता था। महल के उपवन में अनेक पशु-पक्षी थे, जिनसे सिद्धार्थ बहुत प्रेम करता था।

एक शाम सिद्धार्थ ने एक हंस को नीचे गिरते देखा। सिद्धार्थ ने दौड़कर उस हंस को गोद में उठा लिया। उसने देखा कि एक तीर उसके पंख में लगा है। उसने झट से तीर निकाला और अपने अंगवस्त्र से कपड़ा फाड़कर हंस के घाव पर लपेट दिया। तभी वहाँ उसका चचेरा भाई देवदत्त हाथ में धनुष लिए आया। उसने कहा, "सिद्धार्थ! यह हंस मेरा है, इसे मुझे दे दो।"

"नहीं, देवदत्त! यह घायल है! मैं तुम्हें इसे नहीं दे सकता।" दुखी होकर सिद्धार्थ बोला।

"तुम्हें दुखी होने की आवश्यकता नहीं है। यह जंगली हंस है। इसे मुझे दे दो।" देवदत्त ने अधिकारपूर्वक कहा। ''पर घायल पक्षी को मैं नहीं दे सकता। इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है।" यह सुनकर देवदत्त क्रोधित होकर बोला, "इसे मैंने मारा है। यह मेरा शिकार है और इस पर मेरा अधिकार है।''

सिद्धार्थ ने शांतभाव से उत्तर दिया, "मैंने इसे बचाया है इसलिए यह मेरा है।"

कहानी सुनाते-सुनाते माँ ने राहुल से पूछा, ''राहुल, हंस पर किसका अधिकार होना चाहिए?''

राहुल ने कहा, "माँ, हंस तो बचाने वाले को ही मिलना चाहिए।"

माँ ने प्रसन्न होकर कहा, ''उचित कहा बेटा।''

वे दोनों भी लड़ते-लड़ते राजा के पास न्याय के लिए गए, तो राजा ने फ़ैसला किया ''हंस पर पहला अधिकार सिद्धार्थ का है, क्योंकि भक्षक से रक्षक महान होता है। अतः हंस सिद्धार्थ को ही मिलेगा।''

यही सिद्धार्थ बड़े होकर महात्मा बुद्ध कहलाए, जिन्होंने अपना समस्त जीवन सत्य, अहिंसा, परोपकार व मानव-धर्म को समर्पित कर दिया।